National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 2; May 2017; Page No. 100-101

भारतीय संगीत में परम उपास्य तत्व – 'नाद'

डॉ० रूचि गुप्ता

एसो० प्रो० संगीत, साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

'संगीत साक्षात् ईश्वर का स्वरूप है' ऐसा भारतीय परम्परा में माना गया है। सृष्टि का जो छंद तरंगित मंडल है, वह नारायणीय स्पंदन का ही रूप है, जिससे प्रतिक्षण सृष्टि का आविर्भाव हो रहा है, इसलिये भगवान ने स्वयं कहा– 'वेदों में मैं सामवेद हूँ।' गान से ईश्वर की आराधना कर उन्हें प्रसन्न किया जा सकता है। गान से ही निष्पन्न होने वाला रस आनंदमय होकर ब्रह्मनंद की अनुभति कराने में समर्थ है। स्थूल रूप में नाद इस लौकिक संसार का प्रतिपालक है वहीं सूक्ष्म रूप में यही नाद स्वर में रमण करता है, आत्मा को रस से आनन्दमय करता है।

सृष्टि रचना का आदितत्व 'आकाश' को माना गया है। ''डॉ० वासुदेव शास्त्री'' का कहना है कि 'आकाश' का गुण 'नाद' है। इसी कारण आकाश और उसके गुण 'नाद' में अन्य विषयों से भी अधिक परिणाम में ईश्वर का स्वरूप विकसित है। अर्थात् आनंद का आविर्भाव आकाश में तथा उससे सम्बद्ध श्रवणानुभव में अधिक है।' इस प्रकार आकाश का आदितत्व होने के कारण 'नाद' सृष्टि का कारण तत्व है। वेद, उपनिषद् एवं अन्य संगीतग्रन्थों में नाद को दास कहा गया है।

संगीत शास्त्र का सम्पूर्ण ज्ञान 'नाद' पर आधारित है। भक्त गायकों ने 'नाद' को 'परमविद्या' के रूप में माना और भगवती की उपासना 'नाद परमविद्या देहि भवानी' कहकर की। 'ब्रह्म' का साक्षात्कार कराने में नादोपासना की अभूतपूर्व महिमा शास्त्रों मे प्रतिपादित की हैं। संगीत महर्षियों ने 'नाद रूपो जनार्दनः कहकर नाद को ब्रह्म के समतुल्य प्रतिष्ठित किया है। परमब्रह्म के आनंदमय रूप की अनुभूति 'साम' के 'उद्गीथ' अथवा 'ओम्' ध्वनि के सम्यक् रूपेण गान में होती है। 'प्रणव' साम के उद्गीथ का सार है और यह 'प्रणव' ही परमब्रह्म का ध्वनिमय रूप है जिसकी उपासना या भक्ति से निर्गुण भक्त ब्रह्म का साक्षात्कार कर लेता है और सगुण भक्त 'ब्रह्म' के परम आस्वाद्य रसमय रूप–गुण–लीला आदि का गान कर उसे प्राप्त कर लेता है। 'छान्दोग्योपनिषद्' में उद्गीथ, परमात्मा और प्रणव को एक ही बताया गया है। 'तैत्तिरीय उपनिषद्' के अनुवाक् 8 में गान्धर्व (संगीत) द्वारा प्राप्त आनंद को ब्रह्मानंद के तुल्य कहा गया है और उससे निष्पन्न होने वाले रस (आनंद) को विशुद्ध एवं आनंदमय बताया गया है। इसी आधार पर संगीत में 'नाद' को 'ब्रह्म' मानकर उसकी उपासना और महिमा प्रतिपादित की है।

'नाद' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की 'नद्' धातु से हुई है जिसका अर्थ–अव्यक्तशब्द 'नन्दति इति नादः' अर्थात् जो ध्वनि नंदन करे या मन को आनंद दे उसे 'नाद' कहेंगे। संगीत को साधन और साध्य दोनों ही रूपों में स्वीकृत किया गया है इसीलिये उसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का साधन माना है। यही कारण है कि संगीत के अनेक ग्रन्थों में नाद को हीं 'ब्रह्म' शब्द से सम्बोधित कर मंगलाचरण किया गया है। 'संगीत रत्नाकार', 'संगीतराज', 'संगीतमकरन्द' ग्रन्थों में 'नाद ब्रह्म' के रूप में मंगलाचरण कर उसकी स्तुति की गई है। नाद शब्द की अत्यन्त सुन्दर व्याख्या उपनिषद् के टीकाकार ने इस प्रकार की है–

'जाग्रदादिचतुष्पञ्चदशविकल्पं न ददातीति नन्द तदैव नादम्'

अर्थात् जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति आदि के विकल्पों को 'न ददाति' नहीं देता है, इसलिये जो 'नद्' है वही नाद है अर्थात् इन सब विकल्पों से वह मुक्ति दिलाने वाला है। ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु में 'ब्रह्म' की तरह नाद व्याप्त है इसलिये इस नाद को 'नाद ब्रह्म' की संज्ञा दी गई है। वैज्ञानिकों ने भी यह सिद्ध कर दिया है कि ध्वनि रूप में नाद रहित सृष्टि कल्पना से परे है। सम्पूर्ण जगती ही अदृश्य रूप में नादमय है। भारतीय संगीत के प्रमुख ग्रन्थ 'संगीत रत्नाकर' में 'शारंगदेव' ने नाद को शिवस्वरूप बताकर कहा–

'चैतन्यं सर्वभूतानां विवृत्तं जगदात्मना'
नादब्रह्म तदानन्दमद्वितीयमुपास्महे।। सं. 1/3(1)

अर्थात् जो समस्त प्राणियों में चैतन्य है तथा जो जगत् के रूप में विवृत है, उस अद्वितीय आनन्दमय 'नादब्रह्म' की हम उपासना करते हैं।

संगीत की देवी सरस्वती संगीत का मूल स्रोत ज्ञान एवं बुद्धि की देवी है। संगीत शास्त्रियों ने उन्हे अप्रत्यक्ष ध्वनि का कारण 'नाद' कहा। 'स्वामी प्रज्ञानन्द' के अनुसार भारतीय चिन्तन में देवी सरस्वती का विचार अत्यन्त सुन्दर हैं। सत्यान्वेषी उनको समस्त सृष्टि, ज्ञान का आधार और सच्चिदानंदमयी मानते हैं। माँ सरस्वती 'नाद ब्रह्म' का अवतार हैं, सर्वोच्च सृजनात्मक ज्ञान का सीधा परिवर्तित रूप हैं। वाक् देवी ओंकार सर्वरूपिणी, नादस्वरूपा और परा विद्या है। 'संगीत–दामोदर' ग्रन्थ में कहा गया है–

नादरूपं परं ज्योतिः नादरूपी परो हरिः।

महेश्वर नादरूप हैं, उनकी 'पराशक्ति' (जिसे योग में 'चिति', 'चित्त शक्ति' आदि भी कहा है) नादरूप है, ऐसा 'मंतग मुनि' ने माना है। ब्रह्मा, विष्णु–महेश भी नादरूप हैं। नाद के बिना न स्वर है, न गीत है, न वाद्य है, न नृत्य है, यहाँ तक कि समस्त ब्रह्मांण ही नादात्मक 'तस्मानादात्मक जगत्' है। नाद के बिना कोई संगीत या संगीत सृजन नहीं–

न नादेन बिना गीतं न नादेन बिना स्वराः।
न नादेन बिना नृत्तं तस्मान्नादात्मकं जगत्।।

'मतंग' के अनुसार नाद के बिना ज्ञान प्राप्ति नहीं और इसके बिना मानव कल्याण भी संभव नहीं है। वह इसलिये क्योंकि नाद अज्ञेय, स्वयं ज्योति, आत्मतेज है और ब्रह्म स्वयं नादरूपी है–

न नादेन बिना ज्ञानम् न नादेन बिना शिवम्।
नादरूपं परम ज्योतिः नादरूपी स्वयं हरिः।।

इस प्रकार इस जगत् का सम्पूर्ण व्यवहार ही नाद पर अवलम्बित

है। जिस प्रकार आत्मा में प्राण, प्राण में ध्वनि, ध्वनि में नाद है वैसे ही नाद में सदाशिव समाहित हैं क्योंकि वे नाद से अभिन्न हैं। 'नादबिन्दूपनिषद्' में नाद की महिमा को सर्वोपरि बताया गया है। नाद में सदा आसक्त रहने वाला चित्त विषयो की आकांक्षा नहीं करता। नाद मनरूपी मृग को बाँधने में जाल का कार्य करता है। 'स्वामी प्रज्ञानंद' ने नाद को ब्रह्म उपासना का सगुण माध्यम बताया है और आत्मा को निर्गुण माध्यम माना है। भगवान श्रीकृष्ण और श्रीराधा और अन्य गोपियों की पवित्र लीला नाद के प्रभाव का एक उच्च दृष्टान्त है।

नाद वस्तुतः जनरंजक भी है और भवरंजक भी। जिस मनुष्य ने भी साधना द्वारा इस नाद तत्व का मूल अथवा सार प्राप्त कर लिया वह संसार में रहते हुये भी मुक्त है। इस संगीतमय नाद की महिमा और उपासना 'संगीत मार्तंड पं ओंकार नाथ ठाकुर' के शब्दों में करते हैं–

''जो समस्त संसार का चैतन्य हैं, जो अद्वितीय और आनंदमय है, जो विश्वरूप में विवृत्त है, जिसकी पंचप्राणों ने, षडदर्शन ने, सप्तलोक ने, अष्टवस्तु ने, नवनिधि ने, दश इन्द्रिय ने, एकादश रूद्र ने, द्वादश आदित्यों ने, इन्द्र, वरूण और मरूत ने, विश्व के मध्य और अंत ने सर्वदा ही उपासना की है, हम भी उस महत् नाद की उपासना करते हैं।''

सन्दर्भ

1. भारतीय संगीत का इतिहास
2. प्रणव भारती
3. स्वतंत्र कला शास्त्र
4. भारतीय संगीत शास्त्र का दर्शनपरक अनुशीलन
5. भारतीय संस्कृति शाश्वत जीवन दृष्टि एवं संगीत